>

Title: Regarding abolition of child labour.

श्री महेन्द्रसिंह पी. चौहाण (साबरकांठा): सभापति जी, आपने मुझे बाल मजदूरी, एक राष्ट्रीय अभिशाप जैसे अति लोक महत्व के मुद्दे को इस सदन के समक्ष रखने का अवसर दिया है, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। महोदय, आजादी के छः दशक बीत जाने के बाद भी जो बातें भारत के लिए शर्म की बहुत बड़ी वजह बनी हुई हैं, बाल श्रम उनमें सबसे ऊपर है। हमारे देश में करोड़ों बच्चे खेलने-कूदने और पढ़ने-लिखने की उम्र में खेतों से लेकर होटलों और खतरनाक उद्योगों में अत्यंत विकट परिस्थतियों में जी तोड़ मेहनत करने के लिए मजबूर हैं। बेफिक्री की उम्र में ही उनके ऊपर इतने तरह की फिक्र लदी हुई हैं कि उनके बोझ तले दबकर वे अपने सोचने-समझने और यहां तक कि सुख-दुख को महसूस करने की क्षमता भी खोते जा रहे हैं।

आज से एक दशक पहले एक सर्वे के मुताबिक लगभग 1 करोड़ 30 लाख बच्चे श्रमिक के रूप में किसी न किसी क्षेत्र में काम करते थे, आज तो ये आंकड़े बहुत आगे निकल गए होंगे। एक अनुमान के अनुसार चार लाख से अधिक बच्चे सड़कों पर अपना जीवन बिताते नजर आते हैं।

महोदय, वर्ष 1981 में गुरुपदस्वामी रिपोर्ट में कहा गया था कि जब तक देश में सामाजिक, आर्थिक असमानता रहेगी, तब तक बाल श्रम उन्मूलन मुश्किल है, क्योंकि एक गरीब परिवार के लिए अपने बच्चे को स्कूल भेजने के बजाए उसे काम पर भेजना ही अधिक व्यावहारिक होता है। सरकार अपने दायित्व से मुक्त नहीं रह सकती। यह सरकार की जिम्मेदारी है कि वह ऐसा वातावरण निर्मित करे, जिसमें बच्चे मजदूरी करने के बजाए पढ़ाई करें।

बाल श्रम के बदले मजदूरी तो मिल जाती है, लेकिन इसके दूरगामी दुष्परिणाम बच्चों को भुगतने पड़ते हैं। अगर वे शिक्षित नहीं होंगे तो हो सकता है कि एक भूमिहीन मजदूर का बेटा उम्रभर मजदूर बना रहे और कचरा बीनने वाले का बेटा उम्रभर कचरा ही बीनता रहे.

सभापति जी, आपके माध्यम से सरकार से मेरा अनुरोध है कि यह राष्ट्रीय अभिशाप बाल श्रम कानून बनाने से खत्म नहीं होगा। इस राष्ट्रीय समस्या को उसकी जड़ में जाकर सामाजिक और आर्थिक विषमताओं को खत्म करके ही देश के भविष्य बच्चों के बचपन को बचाया जा सकता है। प्रतिभा कहीं भी हो, वह राष्ट्र की पूंजी होती है। अतः राष्ट्र जागरण के माध्यम से उन्हें शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़कर कुशल नागरिक बनाया जाए।

श्रमिकों के जीवन के बारे में एक कवि की निम्न पंक्तियों को मैं उद्धृत करना चाहूंगा :-

यह कैसा जीवन है जिसमें आती कभी बहार नहीं।

यह कैसा परिवर्तन है, जिसमें वंचित का उपकार नहीं।

यह कैसा जीवन है जिसमें जीवन से प्यार नहीं।।